Vol 6 Issue 5 June 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016

Indian Streams Research Journal

जौनपुर जिले में समेकित बाल विकास योजना में पजीकृत धात्री माताओ की पोषणात्मक स्थिति का आंकलन

डॉ .सविता अहलूवालिया
शोध निर्देशिका ,एशोसिएट प्रोफेसर , महिला पी.जी. कालेज अमीनाबाद, लखनऊ .

Co - Author Details :

रूचि सिहं
शोधार्थिनी

सारांश—
समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम दुनिया का सबसे बड़ा सामुदायिक विकास आधारित कार्यक्रम है जो बच्चों की उन्नति और विकास के लिए कार्य करता है। अनेक अध्ययनों से पता चला है कि भारत में शिशुओं और बच्चों में मृत्यु और रोग की दरे ऊँची होने का सबसे प्रमुख कारण कुपोषण है। देश की ४०.६ प्रतिशत जनता गरीब है। अपनी कमाई हुई राशि का ८० प्रतिशत भोजन पर खर्च करने के बावजूद वे संतुलित आहार प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसी कारण उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने ०२ अक्टूबर १९७५ में समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम की स्थापना की। इसे एकीकृत बाल विकास सेवा कार्यक्रम भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसको Integrated Child Development Services कहा जाता है। इसका संक्षिप्त नाम ICDS है (प्रसार शिक्षा, पुष्प शॉ गीता, शीला शॉ जायस, पुष्प शॉ रॉबिन)। समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम मुख्यतः कम आय वाले परिवारों की गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली धात्री माताओं, १४ से १८ वर्ष आयु की किशोरियों तथा जन्म से ०६ वर्ष की आयु के बच्चों के विकास के लिए भारत सरकार ने यह योजना चलाई है (मानव विकास, पाण्डेय सुधा)।

प्रस्तावना :—

समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें पूरक आहार के साथ अन्य बहुत सी सेवायें दी जाती है जिनमें स्वास्थ्य परीक्षण, सन्दर्भ सेवायें, टीकाकरण, पूर्वशाला शिक्षा और पोषण व स्वास्थ्य सूचनायें है (W.W.W.Integrated child development service in India.com May २०१३)। पूरे विश्व में पोषकीय आवश्यकता को पूर्ण करने वाला इससे बड़ा कोई कार्यक्रम नहीं हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा स्कूल जाने से पूर्व के बच्चों और उनकी माताओं के जीवित रहने की दर बढाने एवं उनके स्वास्थ्य, पौष्टिक भोजन, स्वास्थ्य शिक्षा उपलब्ध कराने वाली महत्वाकांक्षी योजना हैं (प्रसार शिक्षा, पुष्प शॉ गीता, शीला शॉ जायस, पुष्प शॉ रॉबिन)।

साहित्य पुनरावलोकनः—

(आई.आई.एच.एम.आर., 2000) राजस्थान राज्य में हुए अध्ययन में पाया गया कि आई.सी.डी.एस. योजना के नए खण्डों की तुलना में पुराने खण्डों में योजना का क्रियान्वयन ज्यादा अच्छे ढंग से हो रहा था। पुराने खण्डों में स्थित आँगनवाडी केन्द्रों से अधिकांश धात्री माताओं को पूरक आहार का लाभ मिल रहा था वही नए खण्डों में स्थित आँगनवाडी केन्द्रों की लाभार्थियों ने बताया कि उनमें से किसी को भी पूरक आहार का लाभ कभी नही प्राप्त हुआ था।

(वर्ल्ड बैकं, 2002) विश्व बैकं द्वारा समेकित बाल विकास योजना की स्थिति को जानने के लिए उत्तर प्रदेश में हुए अध्ययन से ज्ञात हुआ कि यहॉ स्थित सभी नए व पुराने खण्डों में धात्री माताओं को पूरक आहार वितरित किया गया था साथ ही उन्हें आयरन एवं फोलिक एसिड की १०० गोलियॉ गर्भावस्था के दौरान सेवन हेतु दी गई थी। अवलोकन एवं क्षेत्र भ्रमण को आधार बना कर यह तथ्य प्राप्त हुआ कि धात्री माताओं को पूरक आहार के अतिरिक्त उनके शिशु को प्रधानमंत्री ग्रामीण रोजगार योजना के अर्न्तगत २०० मिली. दूध उपलब्ध कराया जाता था।

(निपसेड, 2003) हिमांचल प्रदेश के पूह व किन्नौर विकास खण्ड में धात्री माताओं के सम्बन्ध में साक्षात्कार एवं अवलोकन विधि द्वारा हुए अध्ययन से पता चला कि आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का एक वृहद उद्देश्य माताओं में अपने बच्चों के स्वास्थ्य एवं उनकी पोषकीय आवश्यकता की देखभाल करने की क्षमता विकसित करना था जो इस कार्यक्रम के विभिन्न घटकों द्वारा सम्पन्न होता था। धात्री माताओं ने अध्ययन में सूचित किया कि उन्हें पर्याप्त मात्रा में पूरक आहार सप्ताह में एक दिन पूरे सप्ताह भर का मिल जाता था।

(फॉसेस, 2005) उत्तर प्रदेश में बच्चों के कल्याण के लिए कार्य करने वाली इस संस्था ने आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम को लेकर किये गए अध्ययन में ज्ञात हुआ कि लगभग ६५ प्रतिशत धात्री माताएं यहॉ के आँगनवाडी केन्द्रों में पंजीकृत थी। पंजीकृत धात्री माताओं को नियमित रुप से पूरक आहार दिया जा रहा था। यह भी देखा गया कि पंजीकृत धात्री माताओं की एक बडी संख्या गरीबी रेखा से नीचे जी रही थी जो बडी मुश्किल से अपने परिवार का गुजारा कर पाने की स्थिति में थी। ये धात्री माताएं इस अवस्था में भी कठोर शारीरिक परिश्रम कर रही थी।

(फॉसेस, 2005) राजस्थान राज्य की समस्त आँगनवाडी केन्द्र को अध्ययन क्षेत्र बनाकर किये गए अध्ययन में पता चला कि यहॉ कि धात्री माताओं को स्तनपान के महत्व के बारे में समुदाय व आँगनवाडी कार्यकर्त्रियों ने अच्छे से समक्षाया था। इसका प्रभाव यह हुआ कि अधिकतम धात्री माताओं ने बच्चे के जन्म के दो घण्टे के अन्दर ही स्तनपान कराया था केवल कुछ ही माताओं ने जन्म के एक दिन बाद अपने बच्चे को स्तनपान कराया था। धात्री माताओं की यह जागरुकता उन्हें अपने बच्चों को कुपोषण से बचाने में सहायक सिद्ध हुई थी।

(निपसेड, 2006) राष्ट्रीय स्तर पर हुए अध्ययन में धात्री माताओं के पंजीकरण को मुख्य लक्ष्य बना कर अध्ययन किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि ५० प्रतिशत धात्री माताओं को पूरक आहार के लिए देश भर में पंजीकरण किया गया था। पूरक आहार के लिए पंजीकृत धात्री माताओं की सबसे अच्छी स्थिति लक्ष्यदीप में पाई गई जहॉ ८७.७ प्रतिशत माताएं पंजीकृत थी। लक्ष्यदीप के बाद दादरा एवं नागर हवेली, अरुणांचल प्रदेश, नागालैण्ड तथा मिजोरम की स्थिति थी। अध्ययन में यह भी पाया गया कि धात्री माताएं प्राप्त पूरक आहार से सन्तुष्ट थी एवं नियमित रुप से इसका सेवन करती थी।

(एन.सी. दसतल, 2006) उडीसा राज्य के समस्त आँगनवाडी केन्द्रों को अध्ययन का क्षेत्र बनाकर हुए इस अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता ने पाया कि यहॉ पर पूरक आहार धात्री माताओं को मॉह में २५ दिन ही वितरित किया जाता था जिसे धात्री माताओं ने अपने लिए पर्याप्त माना था। पूरक आहार की गुणवत्ता को लेकर किये गए अध्ययन में ८६ प्रतिशत धात्री माताओं ने इसकी गुणवत्ता को सन्तोषजनक माना था। ६५ प्रतिशत पूरक आहार का लाभ न ले रही धात्री माताओं ने माना कि पूरक आहार स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर को सुधारने के लिए उपयोगी था तथा यह कुपोषण को भी दूर करता था। राज्य की ३३ प्रतिशत धात्री माताओं ने यह भी सूचना दी की उनकी व उनके बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल आँगनवाडी केन्द्र पर की जाती थी व आवश्यकता पडने पर आगे की चिकित्सा के लिए स्वास्थ्य केन्द्र जाने की भी सलाह दी जाती थी।

(वी.डी. गडकर, 2006) झारखंड राज्य में स्थित आँगनवाडी प्रशिक्षण केन्द्रों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि यहॉ के ३० आँगनवाडी केन्द्रों में पंजीकृत १५० धात्री माताओं में से १२० धात्री माताएॅ पूरक आहार के महत्व से अच्छी तरह से परीचित थी व उसका सेवन नियमित करती थी। इन धात्री माताओं ने सूचित किया कि उन्हें आँगनवाडी केन्द्र में चलने वाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी समय-समय पर दी जाती थी। टीकाकरण, पूरक आहार, व स्वास्थ्य परीक्षण के महत्व से आँगनवाडी कार्यकर्त्रियों ने उन्हें अच्छे ढंग से बैठकों के माध्यम से बताया था। उन्हें यह योजना अपने लिए उपयोगी लगी थी।

(फॉसेस, 2009) द्वारा नई दिल्ली राज्य पर किये गए अध्ययन से पता चला कि धात्री माताओं ने पूरक आाहार (जो उन्हें आँगनवाडी केन्द्र से मिला था) को अपने पारिवारिक सदस्यों में भी वितरित किया था। यहॉ औसतन प्रत्येक आँगनवाडी केन्द्र में ०३-०४ धात्री माताएं ही पूरक आहार हेतु आती थी जबकि औसतन पंजीकृत १५ लाभार्थियों के मुकाबले यह संख्या काफी कम थी जो कि चितांजनक स्थिति की ओर सूचना प्रदर्शित करता था।

(प्रतिभा सिहं, 2011) लखनऊ जनपद को अध्ययन क्षेत्र बनाकर किए गए अध्ययन में पाया गया कि यहॉ कि धात्री महिलाओं में पूरक आहार के प्रति जागरुकता पाई गई थी। ६८ प्रतिशत धात्री महिलाओं ने बताया कि आँगनवाडी कार्यकर्त्रियों ने उन्हें पूरक आहार की गुणवत्ता व उपयोगिता की जानकारी दी थी और उन्हें नियमित रुप से पूरक आहार ग्रहण करने को प्रोत्साहित करती थी; साथ ही वे अपने बच्चे को कुपोषण से बचाने के लिए नियमित स्तनपान व छः मॉह बाद स्तनपान के साथ ही पूरक आहार देने के सम्बन्ध में भी उन्हें जागरुक किया था।

शोध क्रिया विधिः–

उदेद्श्यः–

समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम का धात्री माताओं के लाभार्थी समूह व लाभ न लेने वाले समूह की पोषणात्मक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री ने जौनपुर जिले का चयन किया है।

प्रतिदर्श एकत्रीकरणः–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री ने अध्ययन में सारगर्भिता व विविधता लाने हेतु नमूना आकार चयन के लिए जौनपुर जिले के चारो दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के कोनों में स्थित चार विकास खण्डों का चयन मानचित्र के अनुसार किया गया। जौनपुर जिले के उत्तर दिशा में स्थित सुइथाकला विकासखण्ड, दक्षिण दिशा में स्थित बरसठी विकासखण्ड, इसी क्रम में पूर्व दिशा में स्थित डोभी विकास खण्ड व पश्चिम दिशा में स्थित सुजानगंज विकासखण्ड का चयन शोध कार्य में आँकड़े एकत्रित करने हेतु प्रथम चरण में किया गया।

शोध कार्य हेतु आँकड़े एकत्रीकरण के लिए द्वितीय चरण में प्रत्येक विकासखण्ड में स्थित पाँच आँगनबाडी केन्द्रों का चयन किया। पाँचों आँगनबाडी केन्द्रों का चयन करने में विविधता, सारगर्भिता व आँकड़ों में समजातियता का भाव लाने हेतु विकासखण्ड में स्थित सुदूर उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम व मध्य भाग में स्थित आँगनबाडी केन्द्रों का चयन किया गया। उत्तरदाताओं का चयन हेतु लघु प्रतिदर्श तकनीकि पर आधारित तालिका के आधार पर किया। ०४ विकासखण्डों के प्रत्येक ०५–०५ आँगनबाड़ी केन्द्र में कुल ८०० धात्री माताएँ पंजीकृत थीं। इस आधार पर शोध का प्रतिदर्श आकार तालिका के आधार पर २६० होता है। इस प्रतिदर्श आकार को सर्वप्रथम दो भाग; लाभ लेने वाली धात्री माता समूह व लाभ न लेने वाली धात्री माता समूह में १३०–१३० बाँट लिया गया। तदुपरान्त ०२ विकासखण्ड से ३२–३२ उत्तरदाताओं व ०२ विकासखण्ड से ३३–३३ उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इसी क्रम में जिन विकासखण्डों से ३२–३२ उत्तरदाता थें; वहाँ प्रत्येक ०३ आँगनबाड़ी केन्द्र से ०६–०६ उत्तरदाताओं का चयन किया गया व ०२ आँगनबाड़ी केन्द्र से ०७–०७ उत्तरदाताओं का चयन किया गया। वही जिन विकासखण्डों से ३३–३३ उत्तरदाताओं का चयन किया वहाँ के ०२ आँगनबाडी केन्द्र से ०६–०६ उत्तरदाताओं का चयन किया और ०३ आँगनबाडी केन्द्र से ०७–०७ उत्तरदाताओं चयन किया गया। लाभार्थी समूह व लाभ न लेने वाले समूह के उत्तरदाताओं का चयन उपरोक्त विधि से किया गया।

लाभार्थी समूह में उन्हीं धात्री महिलाओं का चयन किया गया जो आँगनबाडी केन्द्र पर पंजीकृत थी व पूरक आहार योजना का लाभ ले रही थी। वही लाभ न लेने वाले समूह में उन धात्री माताओं को रखा गया गैर पंजीकृत थी। इस योजना में बच्चे के जन्म देने के बाद से ०६ माह तक की धात्री माताओं को सम्मिलित किया गया क्योकि ०६ माह के बाद उनके शिशुओं को पूरक आहार मिलने लगता हैं।

आँकडे एकत्रीकरण का स्त्रोतः–

उपरोक्त उद्देश्य प्राप्ति हेतु २४ घण्टे स्मरणीय तालिका का प्रयोग करना उपयोगी था क्योकि पूरक आहार ग्रहण करने वाली लाभार्थी धात्री माता व बगैर पूरक आहार ग्रहण करने वाली धात्री माताओं के पोषण स्थिति का उपयुक्त आंकलन आहार सर्वेक्षण करके ही प्राप्त किया जा सकता था। २४ घण्टे स्मरणीय तालिका द्वारा आँकडें प्राप्त करने हेतु सर्वप्रथम उन धात्री माताओं का चुनाव किया गया जो पूरक आहार ग्रहण करती थी। उन्हें लाभार्थी समूह में रखा गया एवम् द्वितीय समूह में वे धात्री महिलाएँ थी जो समेकित बाल विकास योजना की परिधि में आती तो थी परन्तु वे पंजीकृत नही थी। वे लाभ न लेने वाली समूह में थीं। विशेष ध्यान यह रखा गया की तुलना करते समय वे समान क्रियाशीलता व निम्न आय वर्ग वाली होनी चाहिए थी। तदुपरान्त शोध क्षेत्र में जाकर प्रथम दिन एक दिन पूर्व ग्रहण किए गए भोजन का नाम, मात्रा, सामाग्री को तालिका में अंकित करने को कहा या पूछकर तालिका में अंकित किया। दूसरे दिन पुनः एक पूर्व के ग्रहण किये गये भोजन की जानकारी तालिका में अंकित की। इसी क्रम में लगातार तीसरे दिन भी आहार की जानकारी तालिका में अंकित करवाई। इस प्रकार २४ घण्टे स्मरणीय तालिका लगातार ०३ दिन तक अंकित कर आँकड़े एकत्रित किये गये। २४ घण्टे स्मरणीय तालिका लाभार्थी धात्री माता व लाभ न लेने वाले धात्री माता दोनों से समान रुप से भरवाई गई।

आँकडों का विश्लेषणः–

२४ घण्टे स्मरणीय तालिका द्वारा प्राप्त ऑकडों का विश्लेषण हेतु भोजन संगठन तालिका की सहायता से आँकडो को ग्राम में बदला गया तदुपरान्त उनकी कैलोरी व प्रोटीन की गणना की गई जो निम्नवत हैः–

तालिका 01 ऊर्जा अन्तःग्रहण

क्र.सं.	वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	T-Test
०१	लाभार्थी समूह की कुल कैलोरी	३३०५.४३ कि. कै.	२५६.३६	२८४.५०
०२	लाभ न लेने वाले समूह की कुल कैलोरी	२६२०.६२ कि. कै.	१६३.८३	२६३
०३	प्र.पो.आ. के अनुसार कैलोरी माँग	३४७५ कि.कै.		
०४	क्र.सं. ०३-०१ का अन्तर	-१७० कि.कै.		
०५	क्र.सं. ०३-०२ का अन्तर	-५५५ कि.कै.		
	प्राप्त T-Test परिणाम की विश्वसनीयता तालिका में स्थिति			.०००

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता हैं कि लाभार्थी समूह की धात्री माताओं का ऊर्जा अन्तःग्रहण औसतन ३३०५.४३ कि.कै. था जो कि प्र.पो.आ. से १७० कि.कै. कम था; वही लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताओं का ऊर्जा अन्तःग्रहण औसतन २६२०.६२ कि.कै. था जो कि प्र.पो.आ. से ५५५ कि.कै. कम था।

तालिका 02 ऊर्जा अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत

क्र.सं.	ऊर्जा अन्तराल	लाभार्थी समूह प्रतिशत	लाभ न लेने वाला समूह प्रतिशत
०१.	३०००-३४७४ कि. कै. प्रतिदिन	३६	७२
०२.	३४७५-३७०० कि. कै. प्रतिदिन	६४	२८

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता हैं कि ६४% लाभार्थी समूह की धात्री माताऍ प्र.पो. आ. के अनुसार आवश्यक ऊर्जा प्राप्त करने में सफल रही; वही २८% लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताऍ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर सकी।

तालिका 02 ऊर्जा अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत वितरण स्तम्भाकृति द्वारा

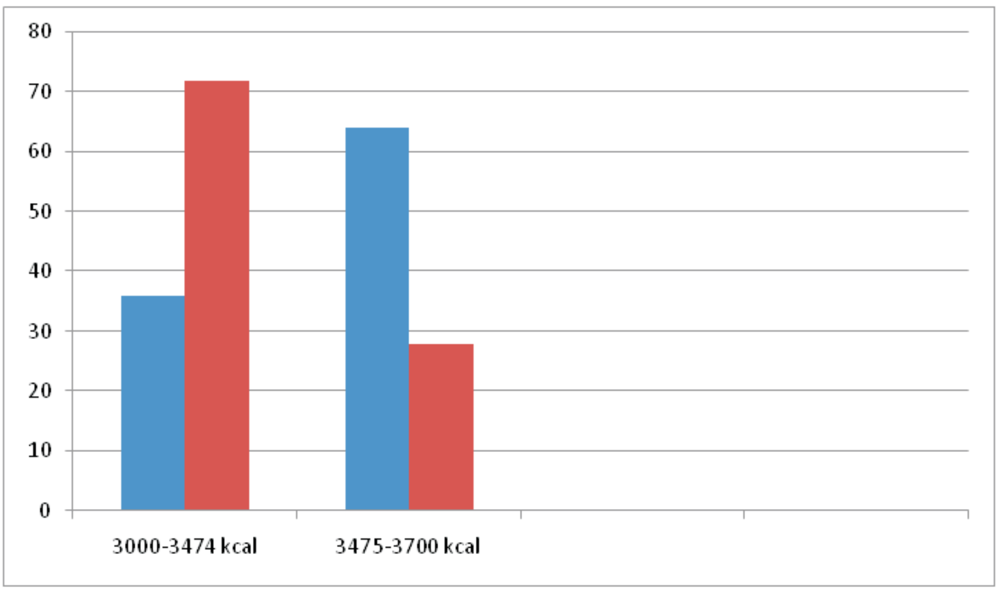

प्रथम स्तम्भ- लाभार्थी समूह
द्वितीय स्तम्भ- लाभ न लेने वाला समूह

तालिका 03 प्रोटीन अन्तःग्रहण

क्र.सं.	वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	T-Test
०१	लाभार्थी समूह की कुल प्रोटीन	७२ ग्रा.	५.०६	६.६१
०२	लाभ न लेने वाले समूह की कुल प्रोटीन	६६ ग्रा.	५.४६	७.०६
०३	प्र.पो.आ. के अनुसार प्रोटीन माँग	७५ ग्रा.		
०४	क्र.सं. ०३–०१ का अन्तर	–०३ ग्रा.		
०५	क्र.सं. ०३–०२ का अन्तर	–०६ ग्रा.		
	प्राप्त T-Test परिणाम की विश्वसनीयता तालिका में स्थिति			.०००

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता हैं कि लाभार्थी समूह की धात्री माताओं का प्रोटीन अन्तःग्रहण औसतन ७२ ग्रा. था जो कि प्र.पो.आ. से ०३ ग्रा. कम था; वही लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताओं का प्रोटीन अर्न्तग्रहण औसतन ६६ ग्रा. था जो कि प्र.पो.आ. से ०६ ग्रा. कम था

तालिका 04 प्रोटीन अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत प्रतिदर्श में वितरण

क्र.सं.	प्रोटीन अन्तराल	लाभार्थी समूह प्रतिशत	लाभ न लेने वाला समूह प्रतिशत
०१.	६५–७४ ग्रा. प्रतिदिन	४८	६६
०२.	७५–८४ ग्रा. प्रतिदिन	५२	३१

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता हैं कि ५२% लाभार्थी समूह की धात्री माताएँ प्र.पो. आ. के अनुसार आवश्यक प्रोटीन प्राप्त करने में सफल रही; वही ३१% लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताएँ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक प्रोटीन प्राप्त कर सकी।

तालिका 04 प्रोटीन अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत वितरण स्तम्भाकृति द्वारा

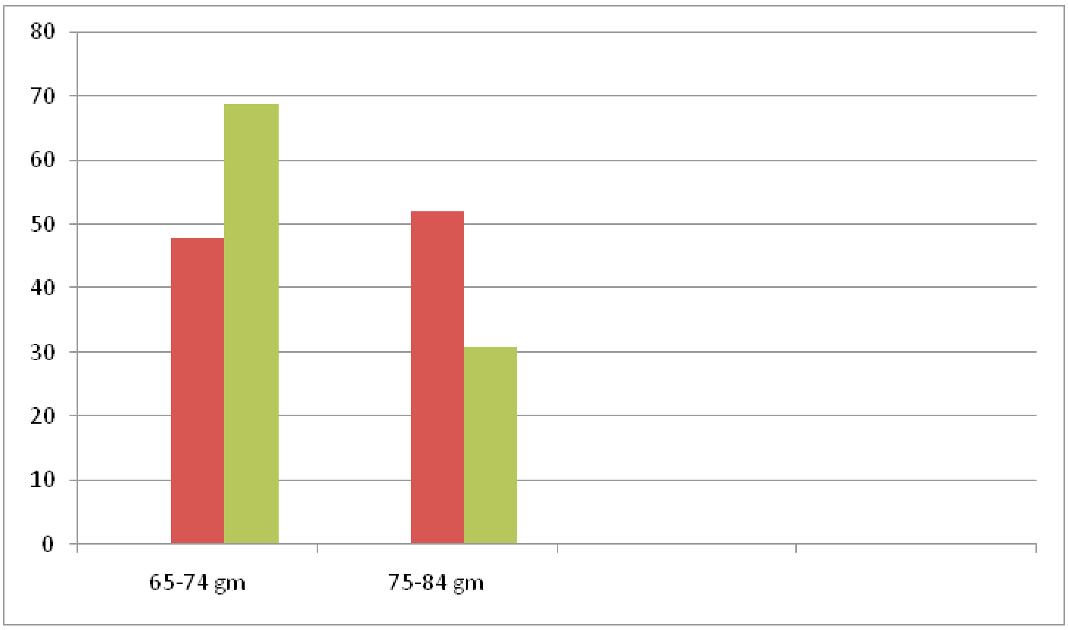

प्रथम स्तम्भ– लाभार्थी समूह
द्वितीय स्तम्भ– लाभ न लेने वाला समूह

परिणाम एवम् विवेचनाः–

- तालिका ०१ व ०२ के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्र.पो.आ. के अनुसार लाभार्थी समूह की ६४% धात्री माताएँ आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर सकी; वही लाभ न लेने वाले समूह की २८% धात्री माताएँ ही आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर सकी।
- तालिका ०३ व ०४ के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्र.पो.आ. के अनुसार लाभार्थी समूह की ५२% धात्री माताएँ आवश्यक प्रोटीन प्राप्त कर रही थी; वही लाभ न लेने वाले समूह की ३१% धात्री माताएँ ही आवश्यक प्रोटीन प्राप्त कर सकी।

जब माँ अपने बच्चे को अपना दूध पिलाती हैं यह अवस्था धात्री अवस्था कहलाती हैं। सामान्य स्वस्थ धात्री माता के शरीर से ४००-७०० मिली लीटर दूध निकलता हैं जो ०६ मॉह के बच्चे की उम्र तक बच्चे की कैलोरी माँग तथा अन्य पौष्टिक तत्वों की माँग की पूर्ति करता हैं। माँ का दूध बच्चे को संक्रामक रोगों से बचाता हैं तथा बच्चे के पाचन संस्थान को वाहृय वातावरण से सांमजस्य करने में सहायता प्रदान करता हैं। माँ के दूध में माँ द्धारा लिए गए पौष्टिक तत्वों का १/४ भाग आ जाता हैं। अतः माँ को अतिरिक्त पौष्टिक तत्वों की आवश्यकता होती हैं ताकि उसके दूध में उचित मात्रा में सभी पोषक तत्व विद्यमान हो; साथ ही माँ को किसी प्रकार की कमजोरी न हो। इसी कारण उसे साधारण स्त्री से ५५० कि.कै. अतिरिक्त ऊर्जा व २५ ग्रा. अतिरिक्त प्रोटीन की आवश्यकता होती हैं। निम्न आर्थिक वर्ग की ज्यादातर स्त्रियां अधिक क्रियाशील होती हैं अतः इस समय प्र.पो.आ. के अनुसार उन्हें ३४७५ कि.कै. ऊर्जा व ७५ ग्रा. प्रोटीन की आवश्यकता होती हैं। लाभार्थी समूह की धात्री माताओं का ऊर्जा अर्न्तग्रहण औसतन ३३०५.४३ कि.कै. था जो कि प्र.पो.आ. से १७० कि.कै. कम था जोकि नगण्य था। वही लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताओं का ऊर्जा अर्न्तग्रहण औसतन २६२०.६२ कि.कै. था जो कि प्र.पो.आ. से ५५५ कि.कै. कम था। इस प्रकार यह वर्ग अतिरिक्त ऊर्जा के रुप में ली जाने वाली कैलोरी की कमी से प्रभावित था। लाभार्थी समूह का मानक विचलन २५६.३६ था व लाभ न लेने वाले समूह का १६३.८३ पाया गया। T-test के परिणाम की विश्वनीयता तालिका ०२ के अनुसार .००० हैं (तालिका ०१ के अनुसार)। ऑकडों से प्राप्त ऊर्जा अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत में वितरण किया गया तो ज्ञात होता हैं कि लाभार्थी समूह की ६४ः धात्री माताएँ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर रही थी; वही लाभ न लेने वाले समूह की २८ः माताएँ ही आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर पा रही थी (तालिका ०२ के अनुसार)।

इसी क्रम में धात्री माताओं को इस समय प्र.पो.आ. के अनुसार ७५ ग्रा. प्रोटीन की आवश्यकता होती हैं। लाभार्थी समूह की धात्री माताओं का प्रोटीन अर्न्तग्रहण औसतन ७२ ग्रा. था जो कि प्र.पो.आ. से ०३ ग्रा. कम था जोकि नगण्य था। वही लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताओं का प्रोटीन अर्न्तग्रहण औसतन ६६ ग्रा. था जो कि प्र.पो.आ. से ०६ ग्रा. कम था। इस प्रकार यह वर्ग प्रोटीन की कमी से प्रभावित था। लाभार्थी समूह का मानक विचलन ५.०६ था व लाभ न लेने वाले समूह का ५.४६ पाया गया। T-test के परिणाम की विश्वनीयता तालिका ०२ क अनुसार .००० हैं (तालिका ०३ के अनुसार)। ऑकडों से प्राप्त प्रोटीन अन्तःग्रहणकर्त्ता का प्रतिशत में वितरण किया गया तो ज्ञात होता हैं कि लाभार्थी समूह की ५२ः धात्री माताएँ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक प्रोटीन प्राप्त कर रही थी; वही लाभ न लेने वाले समूह की ३१ः माताएँ ही आवश्यक प्रोटीन प्राप्त कर पा रही थी (तालिका ०४ के अनुसार)। स.बा.वि. योजना के कारण गैर पंजीकृत समुह की तुलना में दुगने से ज्यादा महिलाएं आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करने में सफल रही थी।

अध्ययन में पाया गया कि लाभार्थी समूह की धात्री माताएँ लगभग आवश्यक ऊर्जा व प्रोटीन दोनो ही पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कर रही थी परन्तु लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताएँ ऊर्जा व प्रोटीन दोनो पोषक तत्वों की कमी से प्रभावित थी जिसके कारण उनका स्वयं का स्वास्थ्य व अपने बच्चों को प्रदत्त दूध की गुणवत्ता का निम्न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड रहा था। स.बा.वि. योजना के कारण गैर पंजीकृत समुह की तुलना में दुगने से ज्यादा महिलाएं आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करने में सफल रही थी। अध्ययन से स्पष्ट है कि तुलनात्मक रुप से लाभार्थी समूह पोषणात्मक स्थिति में लाभ न लेने वाले समूह से बेहतर था।

लाभ न लेने वाले समूह ने पंजीकरण ना कराने के निम्न कारण बताएः–

- प्रदत्त पूरक आहार का स्वादिष्ट न होना।
- प्रदत्त पूरक आहार में कभी-कभी कीडे होना या सडा होना।
- प्रदत्त पूरक आहार के रुप में प्रत्येक बार ''पंजीरी'' ही प्राप्त होना जिससे एकरसता का आना व एकरसता के कारण ग्रहण करने में अरुचि दिखाना।
- परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति।
- प्रदत्त पूरक आहार ग्रहण करने के प्रति जागरुक न होना।
- धात्री अवस्था में अधिक क्रियाशील होने के कारण स्वयं भोजन व पूरक आहार के प्रति ध्यान न दे पाना।

निष्कर्षः–

अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि लाभार्थी समूह की ५८% धात्री माताएँ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक ऊर्जा व प्रोटीन प्राप्त करने में सफल रही थी; वही लाभ न लेने वाले समूह की केवल ३०% धात्री माताएँ प्र.पो.आ. के अनुसार आवश्यक ऊर्जा व प्रोटीन प्राप्त कर पा रही थी। यह भी देखा गया लाभार्थी समूह को आवश्यक ऊर्जा व प्रोटीन की कमीं का औसत लाभ न लेने वाले समूह से ०३ गुना कम था। अध्ययन में देखा गया कि लाभार्थी समूह की धात्री माताएँ लगभग आवश्यक ऊर्जा व प्रोटीन दोनो ही पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कर रही थी परन्तु लाभ न लेने वाले समूह की धात्री माताएँ ऊर्जा व प्रोटीन दोनो पोषक तत्वों की कमी से प्रभावित थी जिसके कारण उनका स्वयं का स्वास्थ्य व अपने बच्चों को प्रदत्त दूध की गुणवत्ता का निम्न होना आदि

समस्याओं का सामना करना पड रहा था। यदि वे पूरक आहार ग्रहण करती तो उन्हें इन समस्याओं का सामना नही करना पडता। ऑगनवाडी कार्यकर्त्रियों को चाहिए कि वे इस वर्ग की धात्री माताओं को पूरक आहार ग्रहण करने हेतु प्रोत्साहित करे। स्पष्ट है कि तुलनात्मक रुप से लाभार्थी समूह पोषणात्मक स्थिति में लाभ न लेने वाले समूह से बेहतर था।

सन्दर्भ सूचीः–

१. पाण्डेय सुधा, २००५, अध्याय ११, मानव विकास, प्रथम संस्करण, साहित्य प्रकाशन, पृष्ठ संख्या १७३–१९७।
२. पॉटनी, डॉ. मन्जू एवम् हरपलानी, डॉ. बी.डी., २०१२, अध्याय ०८, प्रसार एवम् संचार, नवीनतम संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ संख्या ११२–११४।
३. पुष्प शॉ गीता, शीला शॉ जायस, पुष्प शॉ रॉबिन, २००२, अध्याय २२, प्रसार शिक्षा, पाँचवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ संख्या २९५–३०६।
४.W.W.W.Integrated child development service in India.com May २०१३
५. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑव हेल्थ मैनेजमेन्ट रिसर्च (आई.आई.एच.एम.आर.), (२०००) बेसलाइन सर्वे फॉर वर्ल्ड बैंक असिस्टेंड आई.सी.डी.एस.–३, प्रोजेक्ट इन राजस्थान।
६. वर्ल्ड बैंक (२००२) कन्सल्टैन्सी फॉर कान्टीनिवस सोशल एसेसमेन्टः अ स्टडी।
७. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव पब्लिक कोंपरेशन एडं चाइल्ड डेवलपमेंट (निपसेड), (२००३) आई.सी.डी.एस. प्रोजेक्ट इम्लीमेंटेशन इन पूह ब्लॉक, किन्नौर ब्लॉक, हिमांचल प्रदेश, बाई रीजनल सेन्टर, लखनऊ।
८. फोरम फॉर क्रेच चाइल्ड केयर सर्विसेज (एफ.ओ.आर.सी.ई.एस./फोंसेस), (२००५) ए सोशल आडिट ऑव आई.सी.डी. एस. इन द स्टेट् ऑव उत्तर प्रदेशः अ स्टडी।
९. फोरम फॉर क्रेच चाइल्ड केयर सर्विसेज (एफ.ओ.आर.सी.ई.एस./फोंसेस), (२००५) द स्टेट्स ऑव द यंग चाइल्ड इन राजस्थानः अ स्टडी।
१०. नेशनल इस्टीट्यूट ऑव पब्लिक कोंपरेशन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट (एन.आई.पी.सी.सी.डी./निपसेड), (२००८) थ्री डिकेट्स ऑव आई.सी.डी.एस.: एन अप्रैजल।
११. एन.सी. दसतल, (२००६) इम्पैक्ट एसेसमेंट/एवैल्यूएशन ऑव आई.सी.डी.एस. प्रोग्राम इन द स्टेट् ऑव उडीसा।
१२. वी.डी. गडकर, (२००६) सिचुएशनल एनालिसिस ऑव ऑंगनवाडी वर्कस ट्रेनिंग सेन्टर्स इन झारखंड।
१३. फोरम फॉर क्रेच चाइल्ड केयर सर्विसेज (एफ.ओ.आर.सी.ई.एस./फोंसेस) (२००९) आई.सी.डी.एस. :ए रिअल्टी चेक।
१४. प्रतिभा सिंह, (२०११) लखनऊ जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में चल रहे आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित एंव गैर लाभान्वित महिलाओं के ज्ञान, अभिवृत्ति एंव व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org